19

सहभागिता और संबंध

आई.सी.ए.आर/डेअर में अंतराष्ट्रीय सहयोग विभिन्न देशों/अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ किए गए समझौतों/कार्य योजनाओं के हस्तक्षरित होने के माध्यम से संचालित हो रहा है और इसमें आई सी ए आर/डेअर की भूमिका नॉडल विभाग की रही है तथा इन्हीं की प्रतिभागिता के माध्यम से कृषि एवं सहयोग विभाग ने नोडल विभाग की भांति कार्य किया। इसके अतिरिक्त विज्ञान एवं टैकनोलॉजी मंत्रालय ने विभिन्न देशों व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर सहयोग का एक कार्यक्रम विकसित किया गया है जिसमें आई सी ए आर/डेअर कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिभागी एजेन्सी है। विदेश मंत्रालय तथा वाणिज्य मंत्रालय के द्वारा गठित किये गये संयुक्त आयोगों/कृषि दलों में कृषि/कृषि अनुसंधान इत्यादि क्षेत्रों एवं डेअर प्रत्यक्ष रूप से अथवा कृषि एवं सहयोग विभाग के माध्यम से प्रतिभागिता करता है। सीजीआईएआर ग्रुप में भारत एक अंशदायी दाता सदस्य है तथा 0.75 अमेरिकी डालर का अंश दान, अर्निबाधित फंड जोकि सीजी संस्थाओं के लिए है, करता है सीजी केन्द्रों या संबंधित केन्द्रों (वित्तीय फंड से पोषित) में वैज्ञानिकों/अधिकारियों को अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनियुक्ति तथा प्रशिक्षण इत्यादि में वर्ष 2009-10 के दौरान भेजा गया। परिषद की गतिविधियां विभिन्न देशों व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ किए गए समझौतों/कार्य योजनाओं संगठनों के साथ किए गए समझौतों/कार्य योजनाओं के अनुसार ही तय करके संचालित की गई। विभाग अपनी विभिन्न गतिविधियों विदेशी नागरिकों के लिए 'तदर्थ श्रेणी' के अर्न्तगत उनके आगमन इत्यादि का आयोजन करता है तथा उनके विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रस्तावों को भी प्राप्त करता है।

समझौता ज्ञापन

- 24 अप्रैल 2009 को एनए एस सी कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में एक समझौता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) तथा बायोडाइवर्सिटी इन्टरनेशनल के मध्य में हुआ जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग बढ़ाने का है।

साझा परियोजनाएं

सन् 2009-10 के दौरान बहुत सी साझा परियोजनाओं के प्रस्ताव प्राप्त किए गए व उन पर विचार भी किया गया। तथापि निम्न परियोजनाओं को लागू करने हेतु अनुमोदन प्राप्त हुआ तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की विभिन्न संस्थाओं में इन्हें कार्यान्वित किया जा रहा है।

सतत् जीविका विकास का प्रबंधन: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद परिसर-पूर्वी क्षेत्र-पटना सतत् जीविका विकास के प्रोत्साहन कार्यक्रम परियोजना को कार्यान्वित कर रहा है इसका उद्देश्य उन गरीब लोगों को जीविका कमाने चलाने और सतत् रखने में मदद करना है जिनकी जीविका प्राकृतिक संसाधनों से चलती है और ऐसा उन्हें संबंधित ज्ञान व तकनीक के द्वारा पूर्णतया बताकर ही किया जा सकता है। इसकी प्रायोजक एजेन्सी विदेश मंत्रालय है, एक ब्रिटिश संस्था जी वाई एसोसिएट ब्रिटेन को यह संविदा दी गई है जो कि डी एफ आई जी इनोवेशन चैलेंज फंड परियोजना को लागू करेगी। इसके अतिरिक्त भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर)—आरसीआर पटना तथा सात अन्य संस्थाएं इस परियोजना में सम्मिलित की गई हैं। इस परियोजना के कुल बजट प्रावधानों में 1,801,246 पाउंड का लेखा-जोखा रखा गया है जिसमें आईसीएआर-आरसीइएआर 68,871 पाउण्ड की वित्तीय राशि 2 वर्ष 7 माह अर्थात 5 नवम्बर 2008 से 30 जून 2011 के लिए रखी गई है। यद्यपि भा.कृ.अनु.प. डी आरई पर कोई भी वित्तीय देनदारी नहीं है फिर भी संस्थान का योगदान ठोस कारणों व आधारभूत ढांचे के निर्माण में ही निहित होगा।

कृषिजनित एवं जंगली उपोष्ण (ट्रापीकल) फल विविधता का संरक्षण और सतत प्रयोग: सतत् जीविकोपार्जन खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण तंत्र सेवाओं का प्रबंधन। भा.कृ.अनु.प. बायोडाईवर्सिटी इन्टरनेशनल के साथ मिलकर उपरोक्त परियोजना में प्रतिभागिता कर रहा है तथा इस परियोजना में उसके अन्य सहभागी सी.आई.एस.एच-लखनऊ, आई.आई.एच.आर बेगलुरू, एन.आर.सी.सी., नागपुर तथा एन.बीपीजी.आर, नागपुर इत्यादि हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विदेश संगठन जो इस परियोजना में सहभागिता कर रहे हैं वे इस प्रकार हैं :

i) इन्डोनेशियन सेन्टर फॉर हार्टीकल्चर रिसर्च एन्ड डिवैलपमेंट, जर्काता, इन्डोनेशिया

ii) मलेशियन एग्रीकल्चर रिसर्च एण्ड डिवेलपमेंट इन्स्टीच्यूट, क्वाला लामपुर और

iii) डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर, चाऊटचाक, बैंकाक।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने भी इस परियोजना को 5 वर्ष यानी एक जनवरी 2009 से 31 दिसम्बर 2013 तक पुनः अनुमोदित कर दिया है। इस परियोजना की कुल लागत 1,03,75,748 अमेरिकी डॉलर है जिसमें यू.एन.ई.पी. के माध्यम से ग्लोबल एन्वार्यरनमैंटल फैसिल्टी के द्वारा भी नगद अंशदान शामिल है तथा इसमें 4 भागीदार देशों में भी नगद अंशदान किया है। भारत द्वारा की गई सहवित्तीयतता नगद तथा अन्य जिन्सों में 19,09,041 अमेरिकी डॉलर है। ग्लोबल एन्वार्यनमैंट फैसिल्टी से प्राप्त वित्तीय सहायता 36,61,674 अमेरिकी डॉलर की है जिसमें भा.कृ.अनु.प. को 943,465 अमेरिकी डॉलर को पांच वर्ष के लिए विभिन्न सम्बद्ध गतिविधियों को संचालित करने के लिए दिए गए हैं।

जैव प्रोद्योगिकी में भारत-स्विस सहयोगः गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल ने इंडो-स्विस सहयोग उपक्रम के जैव प्रोद्यौगिकी परियोजना-फंफूदी रोग के लक्षण वर्णन तथा जीन संबंधी बढ़ाव-गेहूं में ताप सहन क्षमता एवं प्रतिरोधकता में सहभागिता की, जिसका उद्देश्य गेहूं में फंफूदी के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता, यथा रस्ट (लीफ एवं स्ट्राइप रस्टस), पाऊडरी मिल्डयू तथा टर्मिनल ताप सहन क्षमता, तथा जलवायु परिवर्तन का प्रभाव को बताना था। इसकी सूचना उक्त निदेशालय से 15 जनवरी 2009 को प्राप्त की गई थी। इसके अलावा इस परियोजना में अन्य सहयोगी प्रतिभागी यथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना एवं प्लांट बायोलॉजी संस्थान, ज्यूरिख विश्वविद्यालय-स्विटजरलैंड ने अपने सहयोग अनुमोदन, 3 वर्षो यथा 9 मार्च 2009 अर्थात जब इस परियोजना को मंजूरी मिली थी कर दिया है। इस परियोजना की कुल लागत 6.95 मिलियन रुपये है जिसमें से विकास एवं सहयोग के लिए स्विस एजेंसी द्वारा 2,450 मिलियन रुपये व जैव प्रोद्यौगिकी विभाग द्वारा 4.5 मिलियन दिए जाएंगे। तथापि इंडो स्विस गेहूं अनुसंधान निदेशालय का योगदान। अंशदान वैज्ञानिक स्टॉफ व अन्य आधारभूत सुविधाओं के रूप में होगा जिसे मौद्रिक रूप में यदि रूपांरित किया जाए तो यह राशि 0.75 मिलियन रुपये बैठती है।

सीमान्त शुष्क भूमि प्रबंधनः केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर यूनेस्को एम ए बी सीमान्त शुष्क भूमि प्रबंधन परियोजना के द्वितीय चरण में प्रतिभागिता कर रहा है। कुल 12 देश इस परियोजना में प्रतिभागिता कर रहे है। जिसकी अवधि पांच वर्ष (2009-13) है तथा इसमें 8,608,5090 अमेरिकी डॉलर का अनुमानित प्रावधान रखा गया है i) फ्लैमिश गर्वनमैंट ऑफ बैलजियम (यू.एस.डालर 1,480,050) ii) प्रतिभागी अंशदायी सहयोगी परियोजना स्थिति (एस.यू.एम.एम.ए.डी, सदस्य राज्य अमेरिकी डॉलर 7,048,450 इसमें भारत सरकार विभिन्न रूपों/जिन्सों में योगदान जिसका मूल्य-अमेरिकी डॉलर 1,50,000) iii) यूनेस्को-एम ए.बी (अमेरिकी डॉलर 40,000) तथा iv) यू.एन.यू आई एन डब्ल्यू ई एन (40,000 अमेरिकी डॉलर) अन्य सहयोगी एजेंसियां तथा यूनेस्को अपने मैन एवं बायोस्फीयर प्रोग्राम के साथ यूनाइटेडनेशन यूनिवर्सिटी इण्टरनेशनल नेटवर्क—जल,पर्यावरण एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम (यू.एन.यू.-आई एन डब्ल्यू इ एच) तथा बैलजियम की फ्लैमिश सरकार। भारत को यूनेस्को से 96,000 अमेरिकी डॉलर मिलेंगे तथा भारत का जिन्सों के रूप में अंशदान 1,50,000 अमेरिकी डॉलर होगा। परियोजना के (2009-13) द्वितीय चरण का उद्देश्य शुष्क भूमि पर अनुसंधान कर रहे अनुसंधानकताओं में ऐसी क्षमता का इतना विकास करना कि वे अपनी वैज्ञानिक खोजों को स्थानीय समुदायों व नीति सृजन को एक समान व एक साथ दे सकें।

भारत में विदेशी नागरिकों की पढ़ाई

विदेशी वैज्ञानिकों के प्रतिनियुक्ति मामलें—प्रशिक्षण/फैलोशिप/छात्रवृति/एसोसिएटशिप/स्थिति/दक्षकार्य कुल 42 थे और 176 उम्मीदवार ईरान/श्रीलंका/इथोपिया/खांडा/म्यांमार/भूटान/बोत्सवाना/ईराक/नेपाल/वियतनाम व नाइजीरिया जिन्हें डॉक्ट्रेट/एम.वी.एस.सी/एम.टैक/बी.एस.सी/बी.टैक/बी.वी.एस.सी तथा पशु स्वास्थ्य डिग्री (A.H) कार्यक्रम तथा लघु कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/डीम्ड विश्वविद्यालयों में 21 अक्टूबर 2009 तक 2009-10 के शैक्षिक सत्र में प्रवेश दिया गया।

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय जोकि डेयर (डी.ए.आर.ई) के अर्न्तगत आता है, ने स्नात्तकोत्तर कार्यक्रम यथा पशु विज्ञान मात्स्यिकी एवं बागवानी तथा अन्य विषयों-सूक्ष्मजीवों विज्ञान, जलजीव संवर्द्धन, मत्स्य विस्तार, फल विज्ञान-सब्जी विज्ञान क्रमशः प्रारम्भ किये है। स्नातक एवं स्नात्तकोत्तर डिग्री/उपाधि कोर्सों के लिये प्रवेश क्षमता का विस्तार किया गया यथा 331 एवं 140 अधिक विद्यार्थी अब प्रवेश ले सकते हैं। विश्वविद्यालय के वर्तमान परिदृश्य में कुल 902 विद्यार्थियों ने स्नातक एवं स्नात्तकोत्तर स्तर के शैक्षिक कोर्सों में प्रवेश लिया हुआ है। सन् 2009 में 137 विद्यार्थियों ने स्नातक तथा 24 विद्यार्थियों ने स्नात्तकोत्तर स्तर तक की शिक्षा पूर्ण की है। भा.कृ.अनु.प. द्वारा संचालित 2009 की कनिष्ठ फैलो परीक्षा में केन्द्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का प्रर्दशन काफी अच्छा व बेहतर रहा है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय के 26 विद्यार्थियों को राष्ट्रीय संस्थानों यथा आई.ए.आर.आई., तथा आईवीआरआई, एनडीआरआई तथा एएसआरआई में प्रवेश मिला। इसी प्रकार 68 अन्य विद्यार्थियों को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नात्तकोत्तर पाठयक्रमों में प्रवेश मिला।

भा.कृ.अ.प. ने अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु 19 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं को केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में शुरू करने की सहमति प्रदान की। ए.आई.सी.आर.पी (स्वयंसेवी केन्द्र) में कंदीय फसलों (आलू के अतिरिक्त, शकरकंद के 33 जनन द्रव्य, अरबी के 27, कसावा के 25 तथा एरोरूट के 3 जनन द्रव्य एकत्र किये गये थे। मणिपुर की कृषि-जलवायु स्थितियों में इन सभी नमूनों में से अधिकतर ने बेहतर कार्य-प्रणाली का प्रदर्शन किया।

अध्यनों से स्पष्ट हुआ है कि मक्का के साथ लोबिया की अत:वर्ती फसलीकरण में 91.9 किंवटल चारा/प्रति हैक्टर की उपज मिल सकती है तथा इससे उन क्षेत्रों के चारे की कमी की समस्या का निदान हो सकता है जहां पर कि मक्का/लोबिया फसलों का अत:वर्ती फसलीकरण उपयुक्त हो। एस्केरिशिया कोली के चार (4) विभिन्न प्रकार (एस.टी.ई.सी./ई.पी.ई.सी/ई.एच.ई.सी) को मिजोरम के छोटे-छोटे डायरिया व बिना डायरिया के सुअरों की विष्ठा से प्राप्त किया गया। एसटीएक्स$_1$, एसटीएक्स$_2$,

ईएईए, ईएच एक्स ए के अनुमानित विषाक्त जीन्स के रूप में डायरिया से पीड़ित तथा स्वस्थ छोटे सूअरों में इन्हें पाया गया। सामान्य शूकरीय रोगाणुओं को सीरो ग्रुप के अंतर्गत यथा 08, 0103, 0108, 0141 तथा 0147 को विलग किया गया। अध्ययनों के आधार पर जंगली सूअर के वीर्य में बैक्टीरिया से उत्पन्न दूषण में यह पाया गया कि क्लोरामेनिकोल तथा सिप्रोफ्लोक्सिन का प्रयोग बैक्टीरिया संबंधी दूषण में ऐमिनो ग्लाइकोसाइडस से तुलनात्मक रूप में ज्यादा प्रभावी है। एक स्थिति विशेष स्थान पर मत्स्य आधारित कृषि पद्धति का विकास कॉलेज ऑफ फिशरीज, लैम्बूचेरा, अगरतला, त्रिपुरा में विकसित किया जा रहा है। जिसे बह रहे पानी तथा परंपरागत, एकीकृत खेती प्रथाओं से प्राप्त किया गया। यथा (कृषि/बागवानी व पशुपालन सत् जलजीव संवर्धन के)। इस मॉडल की उपयोगिता को खेती तथा छोटे किसानों के खेत में जांचा-परखा जा रहा है। विश्वविद्यालय बहुत सजगता से विस्तार-शिक्षा की गतिविधियों में कार्यरत रहा। विश्वविद्यालय ने उत्तरी-पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा इसके साथ-साथ राष्ट्रीय सेमिनार एकीकृत कीट-प्रबंधन रणनीतियां ताकि वर्तमान एग्रीकल्चर जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में बढ़ते हुए कीड़े-मकोड़ों की रोकथाम की जा सके। इस सेमिनार का आयोजन कॉलेज ऑफ होर्टिकल्चर तथा फोरेस्ट्री, पासीघाट अरुणाचल प्रदेश ने उक्त प्रदर्शनी के दौरान किया। कॉलेज ऑफ हार्टिकल्चर एवं फोरेस्ट्री, पासीघाट जो कि जिला इस्ट/पूर्वी सियांग में है इस क्षेत्र के दस गांवों के ई-गर्वनेंस से जोड़ा गया। एक राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार-सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी का प्रयोग कृषि एवं ग्रामीण विकास को कॉलेज ऑफ हार्टिकल्चर एवं फोरेस्ट्री, पासीघाट में आयोजित किया गया। विस्तार कार्यक्रमों के अर्न्तगत उत्तम क्वालिटी के बीजों का उत्पादन रोपण सामग्री तथा मत्स्य बीज इत्यादि के उत्पादन पर विशेष बल दिया गया। सन् 2009-10 के दौरान धान के बीज की किस्म सी ए यू आर 1 का 65 टन बीजोत्पादन किसान सहभागिता बीज उत्पादन कार्यक्रम में किया गया। यह बीज अभी विभिन्न प्रक्रियाओं में जाचां-परखा जा रहा है। तथा अगले खरीफ में मौसम में किसानों को उपलब्ध करा दिया जाएगा। वायरस मुक्त खांसी-संतरो के 0 लाख पौध तैयार की जा रही है। भारतीय मेजर कार्य की अंगुली मीन प्रजाति 5 लाख तथा 5000 लाख पूर्व स्थिति, जलीय झींगा का उत्पादन किया गया तथा उन्हें त्रिपुरा के किसानों में वितरित कर दिया गया। शिक्षा कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने के लिए विश्वविद्यालय ने अच्छी ढांचा संबंधी सुविधायें स्थापित की हैं। कॉलेज ऑफ वैटरनिटी साइंस जो आइजोल, मिजोरम में पुस्तकालय भवन, कॉलेज ऑफ हार्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री पासीघाट में प्रशासनिक एवं शैक्षिक खंडो की स्थापना, कॉलेज ऑफ फिशरीज, लैम्बूचेरा, अगरतला में खेल परिसर की स्थापना तथा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग तथा पोस्ट हार्वेस्टटेक्नोलॉजी, रानीपुल, सिक्कम में अतिथिगृह जैसे कार्य संपन्न हो चुके है।

नयाचार/शिष्टाचार गतिविधियां

विदेशों में प्रतिनिधिमंडलों का जाना

- डा. सुरेश कुमार, इन्डो यूस अकाई कार्यक्रम के अंतर्गत आई जी एफ आर आई, झांसी के वरिष्ठ वैज्ञानिक मिसूरी विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर फूड एंड नैचुरल रिर्सोसिस अमेरिका में 11 अप्रैल से 25 मई 2009 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम- ''एम.आई.आर.एन. ए. एस. में अजीवीय प्रभाव को झेलने की सहनशक्ति बढ़ाने हेतु'' में प्रशिक्षण के लिए गये।
- डा. मनोज कुमार यादव, सहायक प्रोफेसर (कृषि बायोटेक्नॉलॉजी) जो कि एस.वी. पटेल कृषि व टेक्नोलॉजी, मेरठ में मिसुरी/कोलोम्बिया विश्वविद्यालय में 11 अप्रैल से 23 अप्रैल 2009 तक प्रवास किया ताकि वे प्लाट-टिशू कल्चर में बदलाव तथा आण्विक जीव-विज्ञान जो कि इन्डो-यू एस नार्मन बोरलॉग फैलोशिप ए.के.आई में भाग लिया है।
- डा. राकेश कुमार वैज्ञानिक (एस.एस.) सी आई एफ टी, कोचीन, मिश्गिन यूर्निवसटी में 1 मई से 30 जून 2009 में प्रशिक्षण के लिए गये तथा जहां उन्होंने खाद्य जनित बेल्ट्रीरियल पैथोजन्स में जीन नॉक आऊट, जीन अभिव्यक्ति तथा नियंत्रण के बारे में समुचित प्रशिक्षण लिया इस कार्यक्रम को नार्मन ई. बोरलॉग फैलोशिप कार्यक्रम 2008, जो कि भारत-अमेरिका में कृषि ज्ञान पहल कृषि के क्षेत्र से सम्बद्ध है। डा. पी.के जोशी, निदेशक, एन.पी, नई दिल्ली रियो डी जानरियो, ब्राजील में 14 जुलाई 2009 को डेयर के प्रतिनिधि के रूप में कार्यकारी दल कृषि के रूप में गए। इस प्रतिनिधि मंडल की अगुवाई सचिव (कृषि) ने की।
- डा. पी.के जोशी, कार्यान्वित वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने रूस की दो सप्ताह की यात्रा 18 अगस्त से 31 अगस्त 2009 तक की, ताकि लवण प्रभावित मृदाओं को कृषि योग्य बनाया जा सके लवण तथा अम्ल प्रभावित मृदाओं, जैव सुधार आई.सी.ए.आर.,आर.ए.ए.एस. कार्ययोजना 2009-10 को कार्यान्वित किया जा सके।
- डा. निहार रजन साहू, सहायक खाद्य सूक्ष्म विज्ञान जीवी, उड़ीसा ने नार्मन ई. बोरलॉग फैलोशिप कार्यक्रम 2008 के तहत 24 अगस्त से 12 सितम्बर 2009 का कानसास स्टेट यूनिवर्सिटी-अमेरिका की यात्रा की।
- डा. सुरेश पाल, अध्यक्ष, कृषि अर्थशास्त्र प्रभाग, आई.ए.आर.आई, नई दिल्ली ने नार्मन बोरलॉग इंटरनेशनल/अर्न्तराष्ट्रीय कृषि विज्ञान टैकनोलॉजी फैलोशिप 2009 जो कि इंडो.यू.एस एकेआई कृषि अर्थशास्त्र परियोजना के तहत आई.एफ.पी.आर.आई, वाशिंगटन, डी.सी, अमेरिका में 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर 2009 तक प्रवास किया।
- डा. अंजनी कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एन.सी.ए.पी., नई दिल्ली ने नार्मन बोरलॉग अर्न्तराष्ट्रीय कृषि विज्ञान टैकनोलॉजी फैलोशिप कार्यक्रम 2008 इंडो-यू.एस.एकेआई कृषि अर्थशास्त्र के तहत 12 अक्टूबर-26 नवम्बर 2009 तक यात्रा की।
- डा. एस.पी.तिवारी, डी.डी.जी (शिक्षा) ने अफगानिस्तान की यात्रा 29 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2009 तक अफगानी विश्वविद्यालय एवं टैकनोलॉजी की स्थापना की संभावनाओं को जानने के लिए की।
- डा. ए.के. मिश्रा, परियोजना निदेशक, सी.आई.आर.बी, मेरठ ने अफगानिस्तान की यात्रा 29 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक इस उद्देश्य से की ताकि भारतीय सहायता से अफगान कृषि एवं टैकनोलॉजी विश्व विद्यालय प्रस्थापना की संभावनाओं को खोजा जा सके।
- डा. एस.एल. मेहता, कुलपति, एम.पी.यू.ए.टी., उदयपुर ने अफगानिस्तान की यात्रा 29 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2009 तक इस उद्देश्य से की ताकि भारतीय सहायता से अफगान कृषि एवं टैकनोलॉजी विश्वविद्यालय स्थापना की संभावनाओं को खोजा जा सके।

- डा. (श्रीमती) ललिता बत्रा, प्रमुख वैज्ञानिक, केन्द्रीय मुद्रा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने रूस की दो सप्ताह की यात्रा 18 अगस्त से 31 अगस्त 2009 तक की, ताकि लवण प्रभावित मृदाओं कृषि योग्य बनाया जा सके तथा लवण अम्ल प्रभावित मृदाओं, जैव सुधार आई.सी.ए.आर.—आर.ए.ए.एस. कार्ययोजना 2009-10 को कार्यान्वित किया जा सके।
- डा. (श्रीमती ललिता बत्रा), प्रमुख वैज्ञानिक तथा डा. पी.के. जोशी, प्रमुख वैज्ञानिक,केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल को ऑल एशिया साइंस रिर्सच इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रो-टेक्नीक्स एंड ऐमिलियोरेश्न्स नार्मित ए.एन. कोस्तयाकोव, ऑल एशिया साइंस रिसर्च इंस्टीटयूट ऑफ फीट नामिनत वी.आर. विलियमस, लोबालेया तथा ऑल एशिया साइंस रिसर्च इंस्टीटयूट ऑफ एग्रो एंड फोरेस्ट सुधार वॉल्गाग्राद की यात्रा 18 से 31 अगस्त 2009 तक की ताकि आई.सी.ए.आर.आर.ए.स. कार्ययोजना 2009-10 के तहत उक्त समस्याएं अध्यनित की जा सके।

विदेशी प्रतिनिधिमंडल

- महामहिम, डा. मार्क फोरटीन, सहायक उप मंत्री (अनुसंधान) कनाडा ने अखिल भारतीय कृषि संस्थान तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (मुख्यालय) नई दिल्ली की यात्रा 20-21 अगस्त 2009 में की।
- महामहिम, श्री मिजेंगो कायांजा पिडां (एम.पी), प्रधानमंत्री संयुक्त गणराज्य, तनजानिया ने 14 सितंबर 2009 को विभिन्न दिल्ली कृषि संस्थानों यथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान/ राष्ट्रीय पादप आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो/राष्ट्रीय कृषि विज्ञान म्यूजियम में गए।
- श्री रंजीत विजेथीलेक, सचिव, कृषि विकास एवं कृषि संबंधी विज्ञान, श्रीलंका ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में 13 जुलाई 2009 को कार्यदल योजना 2010-2011 पर चर्चा हेतु आए तत्पश्चात प्रतिनिधिमंडल ने आर.ए.एस.आर.आई.एनकैप, भा.कृ.अनु.प. एन.आर.सी.पी.वी., एम.वी.पी.जी.आर.एन.ए.आर.एम.,पूसा, नई दिल्ली का दौरा किया।
- श्री परशुराम लाल कारना, निदेशक, वित्तीय प्रशासन तथा श्री नरेन्द्र लाखे, प्रशासनिक अधिकारी, नेपाल कृषि अनुसंधान परिषद, नेपाल ने 7-11 सितम्बर 2009 को कार्यदल योजना 2010-11 के अन्तर्गत राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद की यात्रा की।
- श्रीलंका कृषि अनुसंधान परिषद, श्रीलंका के एक चार सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने 21 से 27 सितम्बर 2009 को राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र एवं नीति अनुसंधान (एन.सी.ए.पी), नई दिल्ली का दौरा किया ताकि भा.कृ.अनु.प.-सी.ए.आर.पी कार्य दल योजना 2008-09 के अर्न्तगत कृषि जोखिम प्रबंधन एवं विस्तार के क्षेत्र में अध्ययन किया जा सके।
- श्रीलंका कृषि अनुसंधान परिषद, श्रीलंका के एक चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय भेड़ ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र, मखदूम, केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल राष्ट्रीय पशु अनुवांशिकी संसाधन अनुसंधान ब्यूरो, करनाल तथा गुरू अंगद देव पशु चिकित्सा एवं पशु पालन विश्वविद्यालय, लुधियाना का दौरा किया ताकि भा.कृ.अनु.प.एवं सी.ए.आर.पी. कार्य योजना 2008-09 के अन्तर्गत पशु धन उत्पादन एवं विकास का अध्ययन किया जा सके।
- डा. कोसोलापोव व्लादिमीर, निदेशक एवं डा. ट्रोफीमोव इल्या, उपनिदेशक, अखिल एशिया चारा विज्ञान अनुसंधान संस्थान नामित वी.आर. विलियम्स, अकादमिक-रूसी परिस्थिति विज्ञान अकादमी, मास्को, रूस ने 10 से 21 जून 2009 केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार तथा केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान की यात्रा भा.कृ.अनु.प.—आर.ए.ए.एस. कार्यदल योजना 2009-2010 के अन्तर्गत पशु उत्पादन, स्वास्थ्य एवं प्रसंस्करण—चारा प्रसंस्करण टैकनॉलोजी यथा सम्पूर्ण चारा, चारा समूह इत्यादि का अध्ययन किया।

भारतीय वैज्ञानिक विदेशी कार्य भार

वैज्ञानिकों को प्रतिनियुक्ति पर, जिनमें भा.कृ.अनु.प. की संयुक्त परियोजनाओं के अन्तर्गत तैनाती शामिल है, विभिन्न देशों में भेजा जाना:

- डा. शिव कुमार, आई.आई.पी.आर.,कानपुर की प्रतिनियुक्ति/ कार्यभार बतौर मसूर पालनकर्ता/ब्रीडर के पद का अनुमोदन, अर्न्तराष्ट्रीय केन्द्र कृषि अनुसंधान शुष्क क्षेत्र (आई.सी.ए.आर.डी.ए.), अलीपी, सीरिया में 3 वर्षों यथा 1 मई 2009 के लिए हुआ।
- डा. एम.एस. रमेश, वरिष्ठ धान अनुसंधान निदेशालय (डी.आर.आर.), राजेन्द्र नगर, हैदराबाद को प्रतिनियुक्ति/कार्यभार का अनुमोदन बतौर वैज्ञानिक धान पालनकर्ता/ब्रीडर के पद पर से आई.आर.आर.आई-फिलीपीन्स में हुई।
- डा.एम.एल.जाट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मक्का अनुसंधान निदेशालय (डी.एम.आर), पूसा परिसर नई दिल्ली की प्रतिनियुक्ति। हब मैनेजर-हरियाणा के रूप में आईआरआरआई भारत ऑफिस सीएसआईएसए में हो गयी। परामर्श का प्रस्ताव का अनुमोदन प्राप्त हो गया तथा वे अब एफ.ए.ओ.टी.सी.डी.सी परामर्शदाता, भूटान में एक परियोजना प्रस्ताव—भूटान में कृषि संरक्षण हेतू अनुकुलन अनुसंधान पर एफएओटी सी डी सी कार्यक्रम के अर्न्तगत 14 दिनों (8 दिन भूटान तथा 6 दिन भारत में परियोजना दस्तावेज को पूर्ण करने हेतू) कार्यरत होगें यथा 9 मई 2009।
- डा. एस.के. बन्दोपाध्याय, भूतपूर्व संयुक्त निदेशक (शैक्षिक), आई वी आर आई-इज्जतनगर तथा वर्तमान प्रतिनियुक्ति में बतौर पशुपालन कमीशनर-पशुपालन विभाग, डेयरी एवं मात्स्यिकी, कृषि भवन-नई दिल्ली प्रतिनियुक्ति/कार्यभार का प्रस्ताव बतौर वरिष्ठ तकनीकी को आर्डिनेटर (पी-5) ग्रेड 1 (निश्चित समयावधि) को एफ ए ओ-संयुक्त राष्ट्र हनोई-वियतनाम में नियुक्त किया गया।

वैज्ञानिकों को विदेश में भेजा जाना

- डा. आर विश्वनाथन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, गन्ना पालन संस्थान, कोयम्बटूर सन् 2007-08 में 3 माह के लिये यथा 15 मई 2009 तक वेगीनिजन विश्वविद्यालय, नीदरलैंड के जैवप्रोद्यौगिकी ओवरसीज विभाग में एसोसिएटशिप अवबार्ड (लघुकालीन) के लिए गए जैवप्रोद्यौगिकी विभाग ने वित्तीय भार को वहन किया।
- डा. एम कैलासम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय खारा जल तथा जलीय कल्चर, चैन्नई सन् 2007-08 में 6 माह यथा फरवरी के तीसरे सप्ताह से अगस्त के दूसरे सप्ताह 2009 तक टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान जैवप्रोद्यौगिकी ओवरसीज विभाग में एसोसिएटशिप अवार्ड (लघु कालीन) के लिए गए। जैव प्रोद्यौगिकी विभाग ने ही वित्तीय भार को वहन किया।
- डा. भूपिन्दर सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आण्विक अनुसंधान संस्थान, आइ.ए.आर.आई-नई दिल्ली पादप पोषण संस्थान, होहेनहिम-स्टटगार्ड जर्मनी में 86 दिनों यथा 17 मार्च से 13 जून 2009

तक दौरे पर गए। मेजबान अकादमी (जर्मनी में) ने प्रवास के सभी खर्चों यथा खाना-पीना, रहना इत्यादि वहन किये। वायुमार्ग किराया में से 50 प्रतिशत हवाई किराया आई.एन.एस.ए के द्वारा और बाकी 50 प्रतिशत वैज्ञानिक द्वारा (स्वयं) अथवा विज्ञान एवं तकनीकी विभाग सी.एस.आई.आर ने वहन किया।

- डा. दिनेश कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.स.-नई दिल्ली यू.जी.सी. की प्रायोजित कॉमनवैल्थ शैक्षिक स्टॉफ फैलोशिप 2008 हेतु 6 मास यथा 1 फरवरी से 31 जुलाई 2009 तक न्यू कैसल अपोन टाइनी विश्वविद्यालय, यूनाईटिड किंगडम का दौरा किया।
- डा. डी.आर. मालवीय, प्रमुख वैज्ञानिक, आई.जी.एफ.आर.आई., झांसी ने सन् 2007-08 में जैव प्रोद्यौगिकी एसोसिएटशिप अवार्ड हेतु 25 मार्च से 24 जून 2009 तक चारा आनुवांशिकी व सुधार के अध्ययन के लिए इ.एच.ग्राहम केंद्र (कृषि इनोवेशन)— एन.एस.डब्ल्यू आधारगत उद्योग विभाग एवं चार्ल्स स्टटअर्ट विश्वविद्यालय वग्गा का दौरा किया।
- डा. अनिल कुमार नायर, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)— आई.आई.एच.आर-बेंगलुरु ने इजीपशीयन अर्न्तराष्ट्रीय कृषि केंद्र, गीजा, इजिप्ट की यात्रा 15 फरवरी से 30 अप्रैल 2009 तक की। इजीप्शीयन अर्न्तराष्ट्रीय कृषि केंद्र (इ.आई.सी.ए) इजिप्ट ने इस दौरे संबंधी खर्चो का वहन किया।
- डा. ए.के. सामान्त, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एन. आई.ए.एन.पी., बेंगलुरु ने एंडवर अनुसंधान फैलोशिप 2009 को प्राप्त करने के लिए शिक्षा विभाग, विज्ञान एवं प्रशिक्षण, आस्ट्रेलिया सरकार में 16 अप्रैल से 15 अक्टूबर 2009 तक प्रवास किया। इस दौरे/यात्रा का वित्तीय प्रबंध इत्यादि डी.ई.एस.टी.-आस्ट्रेलिया ने किया।
- डा. (श्रीमती) जी.निर्मला, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.आर.आई.डी.ए, हैदराबाद ने हयूबर्ट एच. हमफ्री फैलोशिप को प्राप्त करने हेतू अप्रैल के अन्तिम सप्ताह 2009 से जुलाई के प्रथम सप्ताह 2009 तक होस्ट संस्थान, यू.एस.ए. की यात्रा की। इस दौरे/ यात्रा का वित्तीय प्रबंध इसी संस्थान द्वारा किया गया।
- डा. पी.जी. पाटिल, साइंटिस्ट (सी.जी), जी.टी.सी. नागपुर, के सी.आई.आर.सी.ओ.टी तथा डा. वी. सांथी, वैज्ञानिक (एस.एस.) बीज टैकनोलॉजी, सी.आई.सी.आर. नागपुर ने प्रशिक्षण कार्यक्रम— कपास उत्पादन एवं टैकनोलॉजी जिसका आयोजन इ.आई.सी.ए. ग्रीजा इजिप्ट ने किया था, में भाग लिया।
- डा. आशीष साहा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.आई.एफ.ए., भुबनेश्वर ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम जीव विज्ञान क्षेत्र जो कि डी.एस.टी. के ब्वायज़कास्ट फैलोशिप अवार्ड 2008-09 के लिए 12 माह यथा मई के दूसरे सप्ताह 2009 से, के लिये फ्रांस के दौरे पर गए। इस दौरे का वित्तीय प्रबंधन विज्ञान और टैकनोलॉजी विभाग ने किया।
- डा.एच.सी. प्रासान्ना, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आई.आई.वी.आर., वाराणसी ने डी.एस.टी.की ब्वायज़कास्ट फैलोशिप 2008-09 जिसकी समयावधि 31 मई 2009 से अगले 12 महीने को प्राप्त करने के लिए पादप विज्ञान विभाग, कैलीर्फोनिया विश्वविद्यालय, डेविस, अमेरिका की यात्रा की। इस दौरे का वित्तीय प्रबंधन विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग ने किया
- डा. टी महापात्रा प्रमुख वैज्ञानिक, एन आर.सी.पी.बी., नई दिल्ली ने एल.आई.सी.ओ.आर., आई एन सी, 4647 सुपीरियर स्ट्रीट, लिंकन, नेबरास्का, अमेरिका का दौरा 6 जुलाई से 8 जुलाई 2009 तक जुताई प्रयोगों के एल.आई.सी.ओ.आर. 4300 डी.एन.ए. विश्लेषण हेतु किया।
- डा. अनिल कुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, आई.जी.एफ.आर.आई., झांसी ने विषय-कृषि जैवप्रोद्यौगिकी जो कि जैव प्रोद्यौगिकी विभाग ओवरसीज़ एसोसिएटशिप अवार्ड 2007-08 के अर्न्तगत आती है, 4 माह की अवधि यथा 25 मई 2009 में भाग लेने हेतु गुएलफ कनाडा गए। इस प्रशिक्षण का विषय-जीव विज्ञान/ पादप आनुवांशिकी संसाधन रहे हैं।
- डा. पंकज कौशल, प्रमुख वैज्ञानिक, सी.आर.आर.आई., कटक ने विषय-कृषि जैव प्रोद्यौगिकी जोकि जैव प्रोद्यौगिकी ओवरसीज एसोसिएटशिप अवार्ड 2007-08 को लेकर प्रशिक्षण हेतु पादप आनुवांशिकी संस्थान पेरूजिया-सी.एनआर, इटली की यात्रा की। इस प्रशिक्षण की अवधि 6 माह यथा 26 मार्च 2009 की थी।
- डा. के. गिरीधर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बैंगलुरू ने ऐन्डेवर फैलोशिप अवार्ड अवधि 6 माह यथा 10 जुलाई 2009 से थी, को प्राप्त करने के लिए क्यू इंग्लैड विश्वविद्यालय-आर्मीयाल, ऑस्ट्रेलिया की यात्रा की।
- डा. तपस दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.स., नई दिल्ली ने प्रशिक्षण कार्यक्रम-कृषि विज्ञान जिसे की इ.आई.सी.ए. ने 2 माह 15 दिन यथा 1 अप्रैल 09 से 15 जून 2009 ने आयोजित किया था, उसमे भाग लेने के लिए इ.आई.सी.ए. इजिप्ट की यात्रा की।
- डा. ई. श्री निवास राव, वैज्ञानिक (एस.एस.), आई.आई.एच.आर., बैंगलुरू ने ए.वी.आरडीसी, पो.बा.42 शानहुआ, ताईवान की यात्रा की ताकि विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग के ब्यायज़कास्ट फैलोशिप सन् 2008-09 जिसकी समयावधि 12 माह यथा 31 मई 2009 को प्राप्त किया जा सके। इस फैलोशिप में अध्ययन का विषय-''मोलिक्यूलर मानचित्र स्थिति एवं मोलिक्यूलर मार्कर-पादप पालन रहा।
- डा. एम. संकरन, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. परिसर एन.इ.एच क्षेत्र, उमीयम ने विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग की ब्वायज़कास्ट फैलोशिप सन् 2008-09 जिसकी समयावधि 12 माह यथा 31.5.2009 से 'मोलीक्यूलर मार्कर एसिस्टिड ब्रीडिंग इन कसावा' को प्राप्त करने के लिए इन्टरनेशनल सेन्टर फार ट्रोफिकल एग्रीकल्चर, काली अश्विन गए।
- डा. अश्विन अशोक राऊत, वैज्ञानिक (एस.एस.), आई.वी.आर.आई., इज्जतनगर ने विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग की ब्वायज़कास्ट फैलोशिप सन् 2008-09 जिसकी समयावधि 12 माह यथा 31 मई 2009 से पहले की है, को प्राप्त करने के लिए टेक्सास टेक विश्वविद्यालय, स्वास्थ्य विज्ञान केंद्र, एल पासो टेक्सास-79905 अमेरिका की यात्रा की।
- डा. जी.आर.पाटिल, संयुक्त निदेशक, एन.डी.आर.आई., करनाल ने प्रौद्योगिकी वाणिज्यीकरण कार्यक्रम-इंडो यू.एस.विज्ञान एवं टैकनोलॉजी फोरम, फुलब्राइट हाऊस, नई दिल्ली में 16 दिन यथा 15-30 मई 2009 में भाग लेने हेतु गए।
- डा. पी. नवीन कुमार, वैज्ञानिक (एस.एस.), भा.कृ.अनु.स., नई दिल्ली विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग की ब्वायज़कास्ट फैलोशिप सन् 2008-09 जिसकी समयावधि 12 माह यथा 31 मई 2009 से पूर्व तथा जिसका विषय फूलों के रंगों में बदलाव-टयूबरोज (पोलाएंगथिस टयूबरोज1) को प्राप्त करने हेतु हिब्रू विश्वविद्यालय जेरूशलम, पो.बा. 12, रेहाबोट 76100 गए।
- डा. सुल्तान सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आई.जी.एफ. आर.आई. झांसी इनसा अर्न्तराष्ट्रीय वैज्ञानिक संयुक्त प्रयास एवं आदान-प्रदान वैज्ञानिक कार्यक्रम 2009-10 में 3 माह हेतु यथा सितंबर 2009 के अर्न्तगत पशु विज्ञान संस्थान, बॉन विश्वविद्यालय जर्मनी गए। वहां पर उनके सभी स्थानीय एवं दैनिक व्ययों को मेजबान संस्थान ने वहन किया। 50 प्रतिशत यात्रा इनसा ने वहन किया तथा शेष 50 प्रतिशत किराया विमान यात्रा इत्यादि

वैज्ञानिक ने स्वयं वहन किया।

- डा. ए.साहू, प्रधान वैज्ञानिक, आई.वी.आर.आई., इज्जतनगर, एंडवर अनुसंधान फैलोशिप अवार्ड जिसकी समयावधि 6 माह यथा नवम्बर 2009 की थी, को प्राप्त करने के लिए शिक्षा विभाग कर्मचारी एवं कार्यस्थल संबंध, आस्ट्रेलिया गए।
- डा. समर्थ लाल मीणा, वैज्ञानिक (एस.एस.), सी.ए.जैड आर.आई., जोधपुर पोस्ट डॉक्टेरल (सस्य विज्ञान) जोकि राष्ट्रीय ओवरसीज छात्रवृत्ति अनुसूचित जनजाति उम्मीदवार और जिसे जनजाति मामले विभाग-भारत सरकार ने 18 माह यथा 5 अक्टूबर 2009 के लिए प्रायोजित किया था, उसे प्राप्त करने के लिए नोटिंगघम विश्वविद्यालय-यूनाइटिड किगंडम-यू.के. गए।
- डा. ए.एस. यादव तथा डा. राज नारायण, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.ए.आर.आई., इज्जतनगर कार्यक्रम—''कुक्कुट उत्पादन एवं स्वास्थ्य'' जिसकी समयावधि 2 माह 7 दिन यथा 10 जुलाई से 17 जुलाई 2009 थी और इसके आयोजक इ.आई.सी.ए. थे, में भाग लेने इजिप्शीयन अर्न्तराष्ट्रीय कृषि केंद्र (इ.आई.सी.ए.), गीजा, इजिप्ट गए।
- डा. सौविक घोष, वैज्ञानिक, एस.एस., डब्ल्यू.टीसी.ई.आर. भुबनेश्वर प्रशिक्षण कार्यक्रम—ग्रामीण विकास जिसे इ.आई.सी.ए. ने 2 माह 7 दिन यथा 10-17 जुलाई 2009 को आयोजित किया इसमे भाग लेने के लिए इजिप्शीपन अर्न्तराष्ट्रीय कृषि केन्द्र (इ.आई.सी.ए.) गीजा-इजिप्ट गए।
- डा. परीक्षायत सिंह, विभागाध्यक्ष, जैव रसायन विभाग, भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली इन्सा अर्न्तराष्ट्रीय वैज्ञानिक सांझा प्रयास एवं आदान-प्रदान वैज्ञानिक कार्यक्रम 2009-10 के अर्न्तगत पफलजिन एरनाहयग, लीईबनीज, ह्नोवर विश्वविद्यालय, जर्मनी गए। वहां पर उनके सभी स्थानीय व्ययों को मेजबान संस्थान व्यय किया। 50% विमान यात्रा इन्सा ने वहन किया तथा शेष 50 प्रतिशत विमान किराया इत्यादि वैज्ञानिक ने स्वयं वहन किया।
- डा. (श्रीमती) प्रमिला कृष्ण, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.आर.आर.आई., कटक ने यू.एस.ई. एफ.1 फुलब्राइट वरिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप कार्यक्रम 2009-10 जिसकी समयावधि 6 माह यथा 10 जुलाई 2009 की थी, प्राप्त करने के लिए अमेरिका की यात्रा की।
- डा. ए. कुमारसान, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. अनुसंधार परिसर, एन.ई.एच. क्षेत्र, उमीयम, मेघालय ने विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग की ब्वायज़कास्ट फैलोशिप सन. 2008-09 जिसकी समयावधि 12 माह यथा सितम्बर 2009 से अगस्त 2010 की थी तथा जिस प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय 'वीर्य का हिमसंरक्षण' था, को प्राप्त करने के लिए स्वीडिश, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय उपासाला-स्वीडन की यात्रा की।
- डा. दिनेश कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित कॉमनवैल्थ अकादमिक स्टॉफ फैलोशिप जिसकी समयावधि 6 माह यथा 1 अक्टूबर 2009 से थी, को प्राप्त करने हेतु ग्लास गो विश्वविद्यालय, यू.के. की यात्रा की।
- डा. परिमल सिन्हा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, नई दिल्ली ने यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित कॉमनवैल्थ अकादमिक स्टॉफ फैलोशिप जिसकी समयावधि 6 माह यथा 28 सितम्बर 2009 की थी, को प्राप्त करने हेतु वारविक विश्वविद्यालय, यू.के. की यात्रा की।
- डा. (श्रीमती) नीता खांडेकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आई.आई.एच.आर. ने यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित कामनवैल्थ अकादमिक स्टॉफ फैलोशिप 2009 जिसकी समयावधि 6 माह यथा 1 अक्टूबर 2009 की थी, को प्राप्त करने हेतु रीडिंग विश्वविद्यालय, यू.के. की यात्रा की।
- डा. बी.एस.चन्देल, प्रमुख वैज्ञानिक, एन डी आर आई, करनाल ने यू. जी.सी. द्वारा प्रायोजित कॉमनवेल्थ अकादमिक स्टॉफ फैलोशिप जिसकी समयावधि 6 माह यथा 1 अक्टूबर 2009 को प्राप्त करने हेतु रीडिंग विश्वविद्यालय, यू.के. की यात्रा की।
- डा. एस. के. कौशिक, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप प्रजनन) फसल विज्ञान विभाग, सी.पी. आर.आई., शिमला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम-''पर्यावरण जोखिम आकलन (इ.आर.ए.)'' के अर्न्तगत तथा यू.एस.-भारत कृषि जैव प्रोद्यौगिकी प्रशिक्षण कार्यक्रम यथा 26 अक्टूबर 2009 में भाग लेने हेतु सेन्ट लुइस मिस्सूरी तथा वांशिगटन डी.सी. की यात्रा की।
- डा. मेजर सिंह, प्रमुख वैज्ञानिक, आई.आई.वी.आर., वाराणसी ने अमेरिकी-भारत कोलैबोरेशन लघु कालीन कार्यक्रम जिसे यू.एस.टी.डी.ए. ने 5 दिवस यथा 26 अक्टूबर 2009 में भाग लेने हेतु मिशिगन राज्य विश्वविद्यालय अमेरिका की यात्रा की।
- डा. बी.सी. घोष, प्रमुख वैज्ञानिक, कार्यरत एस.आर.एस., बेंगलुरु ने प्रशिक्षण कार्यक्रम जैव गतिशील पैप्टाइड दुग्ध प्रोटीन तथा पेय विकास पेय पदार्थ जैव गतिशील स्वास्थ्य प्रवंर्धन था तथा जिसे ऐंडवर एगज्यूकेटिव अवार्ड 2009 के अर्न्तगत शैक्षिक कर्मचारी कार्यस्थल संबंध, ऑस्ट्रेलिया सरकार ने समयावधि 4 माह यथा नवम्बर 2009 के लिए आयोजित किया था में भाग लेने हेतु विक्टोरिया विश्वविद्यालय, मेलबर्न, आस्ट्रेलिया की यात्रा की।
- डा. सत्यांशु कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एन.आर.सी.पी.आर.एम. बेंगलुरु ने पोस्ट डॉक्टोरल फैलोशिप—पादप अर्क औषधीय उपयोग को प्राप्त करने हेतु ओडेगन विज्ञान एवं टैकनोलॉजी कॉलेज, पश्चिमी केन्टुकी विश्वविद्यालय, अमेरिका में प्रवास किया। इस समयावधि (9 माह यथा 2 मार्च 2009) में उन्हें 30,000 अमेरिकी डॉलर प्रतिमाह स्टाइफंड के तौर पर दिए गए।
- डा. के.एस.राय, वैज्ञानिक एस.एस., एन.आई.ए. एन.पी., बेंग्लुरु ने विज्ञान एवं टैकनोलॉजी विभाग की ब्वायज़कास्ट फैलोशिप कार्यक्रम 2008-09 जिसकी समयावधि 12 माह यथा मई 2009 की तथा जिसका विषय जीव विज्ञान को प्राप्त करने हेतु एरीजोना विश्वविद्यालय अमेरिका की यात्रा की।

विदेशों में भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिनियुक्ति

- डा. पी.के. जोशी, निदेशक, एनकैप, नई दिल्ली ने पेरिस, फ्रांस में आयोजित 29 से 30 अप्रैल, 2009 को सीसीसीपी संचालन समिति की पहली बैठक में भाग लिया।
- डा. जी.पी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आनुवंशिकी विभाग, भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली ने 13 अप्रैल, से 8 मई 2009 तक ''फीनोटाइप फॉर फिजियोलोजिकल ट्रेट बेस्ड ब्रीडिंग'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सिम्मिट, मैक्सिको का दौरा किया।
- डा. मसूद अली, निदेशक, आईआईपीआर, कानपुर ने लिलोंग्वा, माल्वी में सेकेण्ड एनुअल ट्रॉपिकल लेग्यूम्स -1 प्रोजेक्ट मीटिंग और पिकपी चेलेन्ज इनिशिएटिव वर्कशाप में भाग लिया।
- डा. प्रवीण कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 2 से 12 जून, 2009 तक अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र द्वारा आयोजित सूखा सहिष्णुता हेतु आलू जीनप्रारूपों का मूल्यांकन विषय पर जर्मनी में प्रशिक्षण लिया।
- डा. एस.के शर्मा, निदेशक, एनबीपीजीआर ने 18 से 20 मई 2009 तक बायोवर्सिटी इंटरनेशनल (मुख्यालय), रोम में एलिस अंतर्राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठक में भाग लिया।
- डा. एच.पी. सिंह, डीडीजी (बागवानी) ने प्रतिनियुक्ति पर

मलेशिया का दौरा यूनईपी/जीईएफ की प्रोजेक्ट संचालन समिति बैठक द्वारा अनुमोदित प्रोजेक्ट कृषि जनित और वन्य उपोष्ण फल विविधता : सतत् अजीविका, खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिकी स्वास्थ्य का प्रोत्साहन में भाग लेने के लिए किया। 14 से 16 मई 2009 तक सेरडांग, मलेशिया में बायोवर्सिटी इंटरनेशनल द्वारा इसका आयोजन किया गया था।

- डा. के.के. वास, निदेशक, सीआईएफआरआइ, बैरकपुर ने 3 से 8 मई 2009 तक फाइनल रैप अप मीटिंग ऑफ द सीपीपीएन-34 प्रोजेक्ट के बारे में प्रतिनियुक्ति पर कायरो, मिस्र का दौरा किया।
- भा.कृ.अनु.प. प्रतिनिधियों (5) ने 27 से 29 मई 2009 तक हजोई, वियतनाम में आयोजित क्योर संचालन समिति की सातवीं वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए दौरा किया।
- डा. एस.के. दत्ता, डीडीजी (फसल विज्ञान) ने 29 से 30 अक्तूबर 2009 तक बैंकाक, थाइलैंड का दौरा आठवीं कोपरा बैठक में भाग लेने के लिए किया।
- डा. मसूद अली, निदेशक, आईआईपीआर, कानपुर और डा. चेलापिल्ला भारद्वाज, वरिष्ठ, वैज्ञानिक भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली ने दलहन (चना और मसूर) के क्षेत्र में अध्ययन के लिए इकारडा का दौरा किया।
- डा. एस. के. शर्मा, निदेशक, एन.बी.पी.जी.आर. ने 9 से 11 जून 2009 तक बायोवर्सिटी इंटरनेशनल (मुख्यालय) रोम का सेकेन्ड स्टेट ऑफ वर्ल्ड प्लांट जेनेटिक रिर्सोसज़ फॉर फूड एंड एग्रीकल्चर (एसओडब्ल्यू-2) को अंतिम रूप देने के लिए विशेषज्ञ परामर्श बैठक में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- डा. सुरेश पाल ने 22 से 23 जून 2009 तक स्टैडिंग पैनल ऑन इम्पैक्ट एसेस्मेंट (एसपीआईए) द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर रोम का दौरा किया।
- डा. सी.एस. रेड्डी, प्रमुख वैज्ञानिक, डीआरआर, हैदराबाद ने 15 सितंबर, 2009 से एक महीने के लिए जोयन्ट एनालिसस ऑफ पीओएसडाटा के लिए प्रतिनियुक्ति पर आईआरआरआई, फिलीपींस का दौरा किया।
- डा. राजेन्द्र प्रसाद, नेशनल फैलो, आईएएसआरआई, नई दिल्ली ने 1 से 5 जून तक इकारडा, सीरिया स्टाफ ताशकंद, उज्बेकिस्तान में प्रशिक्षण कार्यक्रम देने के लिए ताशकंद, उज्बेकिस्तान का दौरा किया।
- डा. एच.पी. सिंह, डीडीजी, (बागवानी) ने 14 से 18 सितंबर, 2009 तक ''ग्लोबल परस्पेक्टिवस ऑन एशियन चैलेन्ज'' पर आईएसएचएस प्रो. मूसा सिम्पोजियम में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर चीन का दौरा किया।
- डा. आर.के. त्यागी, प्रमुख वैज्ञानिक, और प्रमुख, जननद्रव्य संरक्षण प्रभाग और डा. (सुश्री) अनुराधा अग्रवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, टीसी एंड सीपी यूनिट, एनबीपीजीआर, नई दिल्ली ने 7 से 21 जून, 2009 तक लवाना, बेल्जियम का प्रतिनियुक्ति पर दौरा ''टैक्नोलोजिकल एंड मैनेजमेंट एस्पेक्ट ऑफ बनाना क्रायो बैंकिंग'' प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए किया।
- डा. सेवा राम, प्रमुख वैज्ञानिक, डीडब्ल्यूआर, करनाल ने 3 से 28 अगस्त, 2009 तक सिम्मट (मुख्यालय) मैक्सिको में ''गेहूं रसायन और गुणवत्ता सुधार'' कोर्स में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- डा. एस.के. चतुर्वेदी, प्रमुख वैज्ञानिक, आईआईपीआर, कानपुर ने 29 जून से 3 जुलाई 2009 तक जारागोज़ा, स्पेन में चिन्हक सहायक प्रजनक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- डा. के.पी. सिंह, वैज्ञानिक, (वरिष्ठ वेतनमान), डीएमआर, नई दिल्ली ने बीएमजी वित्त पोषित आईसीएआर सिम्मिट साझा परियोजना (1 से 31 जुलाई, 2009 तक) अब पुनः निर्धारित 15 सितंबर से 15 अक्तूबर, 2009 तक प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए होहेनगेन, जर्मनी का दौरा किया।
- डा. एन. शोभा रानी, प्रमुख वैज्ञानिक, डीआरआर, राष्ट्रीय समन्वयक ने 10 से 11 सितंबर 2009 तक आईएनजीईआर, टीएसी बैठक में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर हैंगझोऊ, चीन का दौरा किया।
- डा. एस.के. पांडे, निदेशक, डा. एस.वी. सिंह, प्रमुख वैज्ञानिक, डा. गोविन्दकृष्णन, प्रमुख वैज्ञानिक और डा. राजेश राणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीपीआरआई, शिमला ने 17 से 19 सितंबर, 2009 तक प्रोजेक्ट बैठक में भाग लेने के लिए ताशकंद, उज्बेकिस्तान का प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- डा. एस.के. लूथरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीपीआरआई, मोदीपुरम ने 24 अगस्त से 18 सितंबर 2009 तक अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र, लीमा में ''जैविक दबाव के लिए जननद्रव्य मूल्यांकन'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- डा. रमन सुंदरम, वैज्ञानिक, वरिष्ठ वेतनमान, डीआरआर ने 16 से 19 नवंबर 2009 तक मनीला, फिलीपींस में आयोजित छठी अंतर्राष्ट्रीय धान आनुवंशिकी सिम्पोजियम आरजी 6 में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर फिलीपींस का दौरा किया।
- डा. ए.के. शर्मा, पीआई फसल सुरक्षा और डा. एम. पाराशर, दोनों प्रमुख वैज्ञानिक, डीडब्ल्यूआर, करनाल ने 26 सितंबर, से 7 अक्तूबर, 2009 तक ''स्टैण्डडाइजेशन ऑफ स्टेम रस्ट नोए टेकिंग एंड इवेल्युएशन ऑफ जर्मप्लाज्म'' में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर केन्या का दौरा किया।
- डा. रवीश छत्रथ, प्रमुख वैज्ञानिक, डीडब्ल्यूआर, करनाल ने ''स्टैण्डडाइजेशन ऑफ स्टेम रस्ट नोए टेकिंग एंड इवेल्युएशन ऑफ जर्मप्लाज्म'' में भाग लेने के लिए 26 सितंबर से 7 अक्तूबर, 2009 तक केन्या का दौरा किया।
- डा. मंगला राय, सचिव, डेअर और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. ने 14 से 18 सितंबर, 2009 तक इक्रीसेट की शासी निकाय और संचालन बैठक में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर बामाका, माली का दौरा किया।
- डा. मंगला राय, सचिव, डेअर और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. ने सितंबर, 2009 में अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान की न्यासी मंडल की बैठक में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर स्यूक्यूबा, जापान का 28 सितंबर से 2 अक्तूबर 2009 तक दौरा किया।
- डा. टी.के. अध्या, निदेशक, सीपीआरआई और डा.पी.के. सिन्हा, प्रमुख वैज्ञानिक/प्रभारी अधिकार, केंद्रीय बारानी उपराऊं धान अनुसंधान केंद्र में क्योर आईएडी प्रोजेक्ट की विशेष कार्यशाला नामत: ''एनेबलिंग पूअर राइस फार्मस टू इम्प्रूव लाइवलीहुड एंड ओवरकम पॉवरटी इन साउथ एंड साउथ ईस्ट एशिया थ्रू द कंर्सोशियम फॉर अनफेवरेबल राइस एंवायरसेंट (क्योर)'' में भाग लेने के लिए अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान, लॉस बेनोस, फिलीपींस का 26 से 27 अगस्त, 2009 तक प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- डा. गुरजीत सिंह मंगत, धान प्रजनक, पादप प्रजनन और आनुवंशिकी विभाग ने 24 अगस्त, से 8 सितंबर, 2009 तक सीएसआईएसए-सहयोगी संस्थान के तहत आईआरआईआई, फिलीपींस में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- प्रो. के.सी. बंसल, राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली ने 18 से 23 जुलाई 2009 तक एएसबीपी में भाग लेने के लिए हवाई और होनोलोलू, यूएसए का प्रतिनियुक्ति पर

दौरा हवाई और आईजेएसए में किया।

- डा. जे.सी. डागर, प्रमुख, मृदा और फसल प्रबंधन, सीएसएसआरआई, करनाल ने नैरोबी, केन्या का 23 से 28 अगस्त 2009 तक प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।
- डा. अचला शर्मा, सहायक पौध प्रजनक, पीएयू, लुधियाना ने 3 अगस्त से 2 अक्तूबर 2009 तक गेहूं सुधार एवं टिकाऊ प्रतिरोधित पर आधारित समन्वित प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए सिम्मिट (मुख्यालय) एलबतान और तोलुका, मैक्सिको स्थित अनुसंधान केंद्र का प्रतिनियुक्ति पर दौरा किया।''
- डा. वी.डी. पाटिल, सहायक महानिदेशक (ओ.पी.), भा.कृ.अनु.प., डा. अरविंद कुमार, निदेशक, डा. जे.एस. चौहान, प्रमुख वैज्ञानिक; डा. महाराज सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डा. पंकज कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सभी डीआरएमआर, भरतपुर से) ने 9 से 16 सितंबर, 2009 तक एसीआईएआर-आईसीएआर प्रोजेक्ट ''चीन-भारत और ऑस्ट्रेलिया में तिलहन-ब्रेसिका का सुधार'' की अंतिम बैठक में भाग लेने के लिए, मेलबोर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया।
- डा. विनय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. सुखविदंर सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीपीआरआई कैंपस, मोदीपुरम, द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र द्वारा 26 से 30 सितंबर, 2009 को आयोजित एरोफोनिक टैक्नोलोजी फॉर सीड प्रोडक्शन, चाइनीज़ एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, बीजींग, चीन में प्रशिक्षण/अध्ययन के लिए प्रतिनियुक्ति पर चीन का दौरा किया।
- डा. आर. सेल्वाराजन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनआरसीबी ने 24 से 29 अगस्त, 2009 तक बनाना बंची टॉप डिज़ीज और बनाना बैक्टिरियल विल्ट पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने के लिए तंजानिया का दौरा किया।
- डा. अजीत कुमार वर्मा, वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) और डा. एन.के. चडढा, प्रमुख वैज्ञानिक, सीआईएफई, मुंबई ने 18 से 27 सितंबर तक ''डवलपिंग एक्वाकल्चर इन डिग्रेडेड इनलैंड एरियाज़ इन इंडिया एंड आस्ट्रेलिया' आस्ट्रेलियन सेंटर फॉर इंटरनेशनल रिसर्च प्रोजेक्ट पर प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया।
- डा. धीरज सिंह, प्रशिक्षण आयोजक, केवीके, काजरी; पाली, राजस्थान ने 23 से 28 अगस्त, 2009 तक नैरोबी, केन्या में कृषिवानिकी पर द्वितीय विश्व कांग्रेस में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर केन्या का दौरा किया।
- डा. ए.के. हांडा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान केंद्र, झांसी 23 से 28 अगस्त 2009 तक नैरोबी, केन्या में कृषि वानिकी पर द्वितीय विश्व कांग्रेस में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर केन्या गये।
- डा. राजेश राणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीपीआरआई, शिमला 29 अगस्त से 8 सितंबर, 2009 तक ''एन्हान्सड फूड एंड इन्कम सिक्योरिटी इन साउथ वेस्ट एंड सेन्ट्रल एशिया थ्रू पोटेटो वेरायटीज़'' पर सीआईपी-सीपीआरआई साझा परियोजना के तहत सर्वेक्षण के लिए बांग्लादेश में प्रतिनियुक्ति पर गये।
- डा. बी. वेंकेटश्वरलू, निदेशक, क्रीडा, हैदराबाद 22 से 24 सितंबर, 2009 तक ''अंडरस्टेंडिंग डेसर्टिफिकेशन एंड लैंड डिग्रेडेशन ट्रेन्डस-सीएसडी, यूएनसीसीडी, ब्यूनोस रेयरस, अर्जेंटीना में अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर गये।''
- डा. एम.एम. मुस्तफा, निदेशक, एनआरसीबी, ने 14 से 18 सितंबर, 2009 तक ''ग्लोबल परस्पेक्टिव ऑन एशियन चैलेन्जेस'' पर अंतर्राष्ट्रीय केला संगोष्ठी में भाग लेने के लिए गुनझोऊ, चीन का दौरा किया।
- डा. (सुश्री) सुखदा मोहनदास, प्रमुख वैज्ञानिक, जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग, आईआईएचआर, बेंगलुरु 14 से 18 सितंबर, 2009 तक गुनझोऊ, चीन में आयोजित ''इन्टरनेशनल बनाना सिम्पोजियम ऑन ग्लोबल परस्पेक्टिव ऑन एशियन चैलेन्जेज'' में प्रतिनियुक्ति के लिए चीन गयीं।
- डा. के.वी. रविशंकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईएचआर, बेंगलुरू 14 से 18 सितंबर, 200 तक ''इंटरनेशनल बनाना सिम्पोजियम ऑन ग्लोबल परस्पेक्टिव ऑन एशियन चैलेन्जेज'' में अनुसंधान पत्र की प्रस्तुति के लिए प्रतिनियुक्ति पर चीन गये।
- डा. एम. एडवर्ड राजा, प्रमुख वैज्ञानिक, आईआईएचआर, बेंगलुरु ''इंटरनेशनल बनाना सिम्पोजिम ऑन ग्लोबल परस्पेक्टिव ऑन एशियन चैलेन्जेस'' में अनुसंधान पत्र की प्रस्तुति के लिए प्रतिनियुक्ति पर 14 से 18 सितंबर 2009 तक चीन गये।
- डा. एम.एस. सरस्वती, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनआरसीबी, त्रिची 14 से 18 सितंबर, 2009 तक ''इंटरनेशनल बनाना सिम्पोजियम ऑन ग्लोबल परस्पेक्टिव ऑन एशियन चैलेन्जेज'' में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर गुनझोऊ, चीन गये।
- डा. रवीश छत्रथ और डा. ज्ञानेन्द्र सिंह, दोनों वरिष्ठ वैज्ञानिक, डीडब्ल्यूआर, करनाल 10 सितंबर से 13 सितंबर, तक ''सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साउथ एशिया'' के गेहूं प्रजनन (उद्देश्य 4) प्रोजेक्ट, बीएमजीएफ, यूएसएआईडी और विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित, में भाग लेने के लिए काठमांडू, नेपाल गये।
- डा. जी.पी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप प्रजनन), आनुवंशिकी प्रभाग, भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली10 से 13 सितंबर, 2009 तक ''सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साऊथ एशिया'' के गेहूं प्रजनन (उद्देश्य 4) प्रोजेक्ट, बीएमजीएफ, यूएसएआईडी और विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित, में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर काठमांडू नेपाल गये।
- डा. (श्रीमती) इंदु शर्मा, वरिष्ठ पादप विषाणुविद्, पीएयू, लुधियाना 10 से 13 सितंबर, 2009 तक ''सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साऊथ एशिया'' के गेहूं प्रजनन (उद्देश्य 4) प्रोजक्ट, बीएमजीएफ, यूएसएआईडी और विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित, में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर काठमांडू नेपाल गयीं।
- डा. ए.एन. मिश्रा, प्रमुख वैज्ञानिक और प्रभारी और डा. एस.वी. साई प्रसाद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.सं., क्षेत्रीय केंद्र इंदौर 10 से 13 सितंबर, 2009 तक ''सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साऊथ एशिया'' के गेहूं प्रजनन (उद्देश्य 4) प्रोजक्ट, बीएमजीएफ, यूएसएआईडी और विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित, में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्ति पर काठमांडू नेपाल गये।
- डा. आर. कल्पना शास्त्री और एस. के. सोअम, प्रमुख वैज्ञानिक, नार्म हैदराबाद ने 1 से 5 सितंबर, 2009 तक नेशनल पार्टनर्स इनीशिएटिव की वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए हेग, नीदरलैंड का दौरा किया।
- डा. विजय पाल भड़ाना, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डीआरआर, हैदराबाद ने 24 अगस्त से 8 सितंबर, 2009 तक 2009 धान प्रजनन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आईआरआरआई, फिलीपींस का दौरा किया।
- डा. एस.एस. राजू, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनकैप, नई दिल्ली, डा. पी. शिनोज़, वैज्ञानिक (कृषि आर्थिकी), एनकैप, नई दिल्ली ने 26 अक्तूबर से 3 नवंबर तक 'बायोफ्यूल एंड द पूअर' प्रोजेक्ट की वार्षिक मॉडलिंग वर्कशाप में भाग लेने के लिए वाशिंगटन डी.सी. अमेरिका का दौरा किया।
- डा. एस.वी. नागचन (निदेशक, पूर्वोतर पहाड़ी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अनु.प. का अनुसंधान परिसर) डा. ए.के. त्रिपाठी (पीआई और वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि आर्थिकी) और डा. ए. पटनायक

(प्रमुख वैज्ञानिक, पौध प्रजनन और सीओपीआई) ने 24 से 25 अगस्त, 2009 को अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान, लॉस बेनोस, फिलीपींस में आयोजित प्रोजेक्ट 'मैनेजिंग राइस लैंडस्केप इन मार्जिनल अपलैंडस फॉर हाउसहोल्ड फूड सिक्योरिटी एंड एनवायरमेंटल सस्टेनेबिलिटी की समापन कार्यशाला में भाग लिया।

- डा. ए.के. सिंह डीडीजी (नार्म), भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय 23 से 28 अगस्त, 2009 तक नैरोबी, केन्या में आयोजित कृषि वानिकी पर दूसरी विश्व कांग्रेस में प्रतिनियुक्ति पर गये।
- डा. आर.के. गुप्ता, प्रमुख वैज्ञानिक, डी.डब्ल्यू.आर., करनाल, ''व्हीट क्वालिटी एंड सस्टेनेबल ड्राइ लैंड फार्मिंग इन साउथ एशिया अंडर एसीआईएआर प्रोजेक्ट नं. सीआईएम/2006/094 में अध्ययन के लिए 5 से 12 सितंबर, 2009 तक ऑस्ट्रेलिया में प्रतिनियुक्ति पर गये।
- डा. पी.के. जोशी, निदेशक, एनकैप, नई दिल्ली और डा. जे.वी.एन.एस. प्रसाद, वरिष्ठ वैज्ञानिक, क्रीडा, हैदराबाद ने आईसीआरएएफ द्वारा आयोजित सेंटर वाइड साइंस मीटिंग, में आयोजित 31 अगस्त से 2 सितंबर, 2009 तक मुख्यालय, नेरोबी, केन्या में भाग लिया।
- डा. रणधीर सिंह, पीआई और प्रमुख वैज्ञानिक, डीडब्ल्यूआर, करनाल ने 27 सितंबर से 1 अक्तूबर, 2009 तक इकारडा, अलिप्पो, सीरिया में एसीआईएआर प्रोजेक्ट नं. सीआईएम/2006/094 के तहत वार्षिक परियोजना प्रगति और नियोजन बैठक में भाग लिया।
- डा. एम. पराशर, प्रमुख वैज्ञानिक, डीडब्ल्यू आर, शिमला ने इकारडा अलिप्पो, सरिया में 1 से 7 सितंबर, 2009 तक बोरलॉग ग्लोबल रस्ट इनिशिएटिव कोर्डिनेशन मीटिंग में भाग लिया।
- डा. एस.एस. बंगा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, (तिलहन), पादप प्रजनन और आनुवंशिकी विभाग ने एसीआईएआर साझा परियोजना सीआईएम/1999/072 के तहत कार्यक्रम में 9 से 30 सितंबर, 2009 तक विक्टोरिया और सिडनी एनएसडब्ल्यू में भाग लिया।
- डा. पी.के. जोशी, निदेशक, एनकैप, नई दिल्ली ने 20 से 22 अक्तूबर तक द्वितीय वार्षिक विज्ञान सप्ताह कार्यशाला में भाग लेने के लिए इकाराडा, अलिप्पो, सीरिया का दौरा किया।
- डा. के.वी. प्रभु, प्रमुख, आनुवंशिकी विभाग, भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली ने बामाको, माली में रिव्यू मीटिंग ऑफ जेनेरेशन चैलेन्ज कार्यक्रम 2009 में भाग लिया।
- डा. एस.एस. बालचन्द्रन, प्रमुख वैज्ञानिक, डीआरआर ने 24 से 31 अक्तूबर, 2009 तक मिशिगन स्टेट, विश्वविद्यालय, यूएसए में भारत-यूएस साझा परियोजना के तहत ''एन्वायरमेंटल रिस्क एस्सेमेंट ऑफ जीएम क्रॉप्स'' विषय पर लघु अवधि कार्यक्रम में भाग लिया।
- डा. पी.के. अग्रवाल, राष्ट्रीय प्रोफेसर, भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली ने 30 सितंबर से 1 अक्तूबर, 2009 तक ''वल्नरेबिल्टि टु क्लाइमेट चेंज : एडाप्शन स्ट्रेटज़िस एंड लेयर्स ऑफ रिसाइलेंस'' प्रायोजना की पहली वार्षिक समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. जी.जी.एस.एन., प्रायोजना समन्वयक और डा.वी.यू.एम. राव, प्रमुख वैज्ञानिक (दोनों कृषि मौसम विज्ञान से), क्रीडा, हैदराबाद ने 30 सितंबर से 4 अक्तूबर 2009 तक ''वल्नरेबिल्टी टु क्लाइमेंट चेंज : एडाप्शन स्ट्रेटज़िस एंड लेयर्स ऑफ रिसाइलेंस'' प्रायोजना की पहली वार्षिक समीक्षा बैठक और ट्रैनिंग वर्कशाप एज़ रिसोर्स पर्सनज़ ऑन एग्री क्लाइमेटिक एनालिसिस जिसमें थ्योरी के अलावा कंप्यूटर प्रेक्टिकल भी शामिल हैं, में भाग लेने के लिए बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. एस.के. पांडे, निदेशक, सीपीआरआई, शिमला ने 2 से 6 नवंबर, 2009 तक इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर ट्रापिकल रूट क्रॉप्स (आईएसआरटीजी) द्वारा आयोजित 15वीं ट्रिनाइयल सिम्पोजियम में पेपर प्रस्तुत करने के लिए सीआईपी, लीमा, पेरु का दौरा किया।
- डा. एम.एस. सहारन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल ने चौथी पीला रतुआ क्रांफ्रेस, जो अंत्याल्या, टर्की में 10-12 अक्तूबर, 2009 को हुई थी, भाग लिया।
- डा. बीरपाल सिंह, संयुक्त निदेशक, सीपीआरआई कैंपस, मोदीपुरम ने 16 से 20 नवंबर, 2009 तक चलने वाली बेलाजियो, इटली में चली बीजिंग बैठक में हिस्सा लिया।
- डा. ए.के. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक (निमेटॉलाजी), डीडब्ल्यूआर, करनाल ने अंत्यालया, टर्की में 21 से 24 अक्तूबर, 2009 तक फर्स्ट सीरियल सिस्ट निमेटोड एनीशिएटिव वर्कशॉप में हिस्सा लिया।
- डा. बी. विमला, प्रमुख वैज्ञानिक, सीटीसीआरआई, त्रिरुवनतपुरम ने लीमा, पेरु में 2 से 6 नवंबर, 2009 को हुई 15वीं ट्रीनियल सिम्पोजियम ऑफ दी इंटरनेशनल सोसायटी फॉर ट्रापिकल रूट क्राप्स (आईएसआरटीसी) में हिस्सा लिया।
- श्री बी. गनेश कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनसीएपी ने 25 अक्तूबर से 5 नवंबर 2009 तक ''हाउस होल्ड सर्वे डाटा क्लेक्शन, एंट्री एनालमिस, रिजन्लट इंटरप्रिरेशन एंड रिपोर्टिंग एंड वैल्यू चैन एनालसिस'' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए इकारडा, सिरिया का दौरा किया।
- डा. एस.के. नास्कर, निदेशक, सीटीसीआरआई ने 27 से 30 अक्तूबर, 2009 तक एचपी स्वीट पोटेटो मीटिंग और 2 से 6 नवंबर, 2009 तक 15वीं इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑफ दी इंटरनेशनल सोसायटी फॉर ट्रॉपिकल रूट क्रॉस (आईएसटीआरसी) में हिस्सा लेने के लिए लीमा, पेरु का दौरा किया।

❑